

**Code No.: MR-49**

Total No. of Questions : 7

Total No. of Printed Pages : 1

**स्नातकपरीक्षा:- २०१५**

**बि.ए. - विद्वन्मध्यमा - तृतीयवर्षः**

**शास्त्रम् - जैनसिद्धांतशास्त्रम्**

**भागः - II, पत्रिका - III**

**विषयः - तत्त्वज्ञानतरङ्गिणि**

**दिनाङ्कः - 31-3-2015**

**गरिष्ठाङ्काः - १००**

**समयः - 10.00 A.M. to 1.00 P.M.**

**Max. Marks - 100**

- 
- |   |    |
|---|----|
| I. ज्ञानभूषणः कः? तस्यकालदेशादिकं लिखत।   | 10 |
| II. शुद्धचिद्रूपस्य स्मरणनिश्चलता तत्त्वं प्रतिपादयत।                             | 15 |
| III. भेदविज्ञान प्राप्ति विषये ग्रन्थोक्तदिशा विवृणुत।                            | 15 |
| IV. शुद्धचिद्रूपस्य ध्याने उत्साहस्य प्रादान्यं विचारयत।                          | 15 |
| V. शुद्धचिद्रूपस्य प्राप्तिः कथं भवति? विशदयत।                                    | 15 |
| VI. इमौ श्लोकौ व्याख्यात।   | 20 |
| १. अनन्तानि कृतान्येव मरणानि मयापिन।<br>कुत्रचिन्मरणे शुद्धचिद्रूपोऽहमिति स्मृतं॥ |    |
| २. तत्साधने सुखं ज्ञानं मोचनं जायते समं।<br>निराकुलत्वमभयं सुगमा तेन हेतुना॥      |    |
| VII. अनयोः स्वरूपं विशदयत।  | 10 |
| १. वर्धमानः।  |    |
| २. निर्जरा।   |    |